



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(65): 226-228

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

डॉ. विष्णुप्रिया जेना

अध्यापिका, संस्कृत

नैतिक शिक्षा तथा व्यवहार

डॉ. विष्णुप्रिया जेना

शोधसार

इस शिक्षा से समाज का भला होता है। नैतिक शिक्षा के बिना कोई भी जाति सबसे आगे नहीं हो सकती। समाज एक नैतिक इंसान और उसके काम से ही आगे बढ़ता है। एक और चीज़ जो एक स्टूडेंट कर सकता है, वह है ईमानदार और न्यायप्रिय बनना, अपने छोटे भाइयों के लिए प्यार और अपने टीचरों के प्रति भक्ति रखना। ऐसी शिक्षा सबसे पहले घर से ही मिलती है। वह अपने परिवार से दया, काबिलियत और हमदर्दी जैसे गुण भी सीखता है। ये गुण नैतिक शिक्षा की निशानी हैं। यह स्टूडेंट भविष्य में देश और दुनिया को लीड कर सकता है। नैतिक शिक्षा से पारिवारिक जीवन बेहतर होता है। नैतिक शिक्षा से स्टूडेंट को पता चलता है कि सही और गलत में से कौन सी बात सही है। बुढ़ापे में अपने माता-पिता की सेवा करने वाले बेटों पर नैतिक शिक्षा का असर साफ़ दिखता है।

नैतिक शिक्षा का स्वरूप

शिक्षा आम तौर पर कोई नीतियों और नैतिकता से घिरी होती है। यह नैतिक रूप से स्वीकृत है। जब अच्छाई और बुराई के बीच द्वंद्व पैदा होता है, तो यह सत्य की जीत होती है। इसलिए, मौजूदा शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा की ज़रूरत हर समय बनी रहती है। इस नीतिशिक्षा से कोई सत्यम शिव सुंदरम का उपासक बन सकता है। इस नीतिशिक्षा से कोई अन्याय और दूसरी बुराइयों को छोड़ सकता है। इससे स्टूडेंट का जीवन ज़्यादा व्यवस्थित और मज़बूत बनेगा। यह स्टूडेंट को दूसरे जानवरों से अलग करता है। यह शिक्षा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करती है। इस शिक्षा से समाज का भला होता है।

विद्यार्थी

नैतिक शिक्षा के बिना कोई भी जाति सबसे आगे नहीं हो सकती। समाज एक नैतिक इंसान और उसके काम से ही आगे बढ़ता है। एक और चीज़ जो एक स्टूडेंट कर सकता है, वह है ईमानदार और न्यायप्रिय बनना, अपने छोटे भाइयों के लिए प्यार और अपने टीचरों के प्रति भक्ति रखना। ऐसी शिक्षा सबसे पहले घर से ही मिलती है। वह अपने परिवार से दया, काबिलियत और हमदर्दी जैसे गुण भी सीखता है। ये गुण नैतिक शिक्षा की निशानी हैं। यह स्टूडेंट भविष्य में देश और दुनिया को लीड कर सकता है। नैतिक शिक्षा से पारिवारिक जीवन बेहतर होता है। नैतिक शिक्षा से स्टूडेंट को पता चलता है कि सही और गलत में से कौन सी बात सही है। बुढ़ापे में अपने माता-पिता की सेवा करने वाले बेटों पर नैतिक शिक्षा का असर साफ़ दिखता है।

नैतिक शिक्षा का व्यवहार

आजकल समाज में बहुत ज़्यादा अन्याय, जुल्म, गलत काम वगैरह फैले हुए हैं। समाज के हर शहर में अशांति और नाराज़गी बढ़ रही है। और अस्थिरता साफ़ दिख रही है। स्टूडेंट बिना ध्यान लगाए काम करते हैं। रफ़्तार नहीं सुधर रही है। धर्म के काम में भी गलत कामों का असर दिख रहा है।

Correspondence:

डॉ. विष्णुप्रिया जेना

अध्यापिका, संस्कृत

यौन रोग औरतों के साथ हिंसा करते हैं और पारिवारिक ज़िंदगी को बर्बाद करते हैं। स्वार्थ इंसान की ज़िंदगी को खराब कर देता है। भाइयों में झगड़ा हो गया। लोगों का देश और जाति से प्यार बहुत दूर तक जाता है। कोई भी आध्यात्मिक रास्ते पर जाने की कोशिश नहीं करता और फ़िल्म नैतिक शिक्षा पर अपना असर डालती है। फ़िल्मों में नैतिक मूल्यों का इस तरह गिरना दिखाया गया है कि इंसान भटक जाता है। ऐसे में नैतिक शिक्षा की ज़रूरत तो बनती ही है। यह सीख स्टूडेंट की ज़िंदगी को पूरा करती है। नैतिक शिक्षा से समाज को अनुशासित किया जा सकता है। एक बिगड़ा हुआ समाज नैतिक स्टूडेंट चाहता है। क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, यह नीति से पता चलता है। जैसे वेदों और उपनिषदों में नैतिकता की बातें मिलती हैं। उदाहरण-

"मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।

आचार्यदेवो भव। अतिथि देवो भव।"¹

भारतीय संस्कृति में माता, पिता, गुरु और अतिथि को भगवान के समान आदर व सम्मान देने की शिक्षा देता है। इसका अर्थ है: माता को ईश्वर मानो, पिता को ईश्वर मानो, गुरु (आचार्य) को ईश्वर मानो, और अतिथि को भी भगवान के समान मानकर सत्कार करो। यह सनातन धर्म में श्रद्धेय और सम्माननीय व्यवहार की मूल शिक्षाओं में से एक है। के लिए जो कि पवित्र कर्म हैं, उन्हें करना चाहिए। इसे विश्वास के साथ चुकाना, इसे विश्वास के बिना नहीं चुकाना चाहिए। श्रेय देयम्। हिया देय। अनुबंध देय। खुशी की जड़ धर्म है। धर्म की जड़ नैतिकता है।

नैतिक शिक्षा की वर्तमान में उपयोगिता

आजकल समाज में बहुत ज़्यादा अन्याय, जुल्म, गलत काम वगैरह फैले हुए हैं। समाज के हर शहर में अशांति और नाराज़गी बढ़ रही है। और अस्थिरता साफ़ दिख रही है। स्टूडेंट बिना ध्यान लगाए काम करते हैं। रफ़्तार नहीं सुधर रही है। धर्म के काम में भी गलत कामों का असर दिख रहा है। यौन रोग औरतों के साथ हिंसा करते हैं और पारिवारिक ज़िंदगी को बर्बाद करते हैं। स्वार्थ इंसान की ज़िंदगी को खराब कर देता है। भाइयों में झगड़ा हो गया। लोगों का देश और जाति से प्यार बहुत दूर तक जाता है। कोई भी आध्यात्मिक रास्ते पर जाने की कोशिश नहीं करता और फ़िल्म नैतिक शिक्षा पर अपना असर डालती है। फ़िल्मों में नैतिक मूल्यों का इस तरह गिरना दिखाया गया है कि इंसान भटक जाता है। ऐसे में नैतिक शिक्षा की ज़रूरत तो बनती ही है। यह सीख स्टूडेंट की ज़िंदगी को पूरा करती है। नैतिक शिक्षा से समाज को अनुशासित किया जा सकता है। एक बिगड़ा हुआ समाज नैतिक स्टूडेंट चाहता है। क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, यह नीति से पता चलता है।

"विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ॥"²

जीवन में धन और सफलता के लिए सबसे पहले विद्या (ज्ञान) की आवश्यकता है, जो विनम्रता से शुरू होकर एक सुखद जीवन की ओर ले जाती है। अच्छा व्यवहार ही नैतिकता है। अच्छा व्यवहार शब्द अच्छे लोगों के व्यवहार, एटीट्यूड या कैरेक्टर को बताता है।

"शैशवेभ्यस्तविद्यानां यौवनेविषयैषिणाम्

वार्द्धक्येमुनिवृत्तीनां योगान्ने तनुत्यऽजाम् ॥"³

बाल्यावस्था में विद्या सीखते थे, युवावस्था में भोग-विलास (धर्मानुसार) करते थे, बुढ़ापे में मुनियों जैसा जीवन जीते थे और अंत में योग के द्वारा शरीर त्याग देते थे। यानी बचपन से ही स्टूडेंट ज्ञान प्राप्त करता है। पहले वह घर से और फिर स्कूल से अपने पिता से नीति सिखता है। एक पढ़ा-लिखा स्टूडेंट जीवन को व्यवस्थित बनाता है। एक स्टूडेंट के लिए नीतिशिक्षा ज़रूरी है और नीतिशिक्षा के बिना जीवन असहनीय है। इसलिए, नीतिशिक्षा हमेशा सभी के लिए ज़रूरी है।

वर्तमान शिक्षा और नैतिक शिक्षा के मध्य अन्तर

स्टूडेंट परिवार से लेकर स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी तक पढ़ सकते हैं। इस शिक्षा से वह ज्ञान हासिल कर सकता है और पैसा कमा सकता है। लेकिन इस समय आध्यात्मिक विकास संभव नहीं है, नैतिक शिक्षा की ज़रूरत महसूस होती है, इस शिक्षा से उत्तम चरित्र तथा उत्तम व्यवहार का निर्माण हो सकता है। चाणक्य ने नैतिकता के बारे में कहा है-

"न कश्चित् कस्यचित् मित्रं

न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः ।

व्यवहारेण मित्राणि

जायन्ते रिपवस्तथा ॥"⁴

इस संसार में न कोई किसी का मित्र है और न कोई किसी का शत्रु। व्यवहार से ही लोग मित्र और शत्रु बनते हैं। कैरेक्टर बनाने के लिए नैतिकता की ज़रूरत तो है ही। आचरण वह है जो एक शिष्य शास्त्रों और गुरुओं की शिक्षाओं के अनुसार करता है। अच्छे इंसान की दुनिया में हमेशा तारीफ़ होती है लेकिन बुरे लोग बुराई के लायक होते हैं। यह कहने से कि धर्म ही आचरण का सोर्स है, यह साबित होता है कि धर्म की जड़ अच्छा आचरण है। सभी धर्मों में सबसे अच्छा नैतिकता है। क्योंकि आचरण से ही सारी खुशियाँ मिलती हैं, आचरण के मामले में मनु कहा था-

"तस्मिन् देशे य आचारः परम्पर्य्य क्रमागतः ।

वर्णानां सान्तराजानां स सदाचार उच्यते ॥"⁵

किसी विशेष देश या स्थान में परंपरा से चले आ रहे आचार (व्यवहार), जो सभी वर्गों और उप-वर्गों के लिए मान्य हों, उन्हें 'सदाचार' कहा जाता है। ज़िंदगी में अच्छे व्यवहार से ज्यादा ज़रूरी

और कुछ नहीं है। इंसान अच्छे व्यवहार से पूजा जाता है, पैसे या ज्ञान से नहीं व्यवहार ही वह धन है जो कभी खत्म नहीं होता-किसी ज्ञानी आदमी को यह बात बिल्कुल सच है। अच्छा व्यवहार सभी लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करने का काम है। लोग अच्छे गुणों की तरफ आकर्षित होते हैं। इसलिए खुशी आसानी से मिल जाती है। अच्छे गुणों से दया आती है। एक सज्जन व्यक्ति हमेशा प्यार का ज़रिया होता है। नैतिकता के बारे में एक और बात कही

"लक्ष्मीर्वसति जिह्वाग्रे मित्रबान्धवाः।

जिह्वाग्रे बन्धनं प्राप्तं जिह्वाग्रे मरणं धृतम् ॥"⁶

जीभ (वाणी) के अग्र भाग पर ही लक्ष्मी का वास है, मित्र और सगे-सम्बन्धी (वाणी से ही) होते हैं, जीभ पर ही बन्धन (विपत्ति) प्राप्त होता है, और जीभ पर ही निश्चित रूप से मृत्यु भी है¹। वैदिक युग में गुरुकुलों का चलन था। शिष्य जलती हुई अग्नि को शुद्ध करते थे। वे गौ आश्रम जाते थे और वहां घने जंगल में शांत वातावरण में होम करके वेदों का अध्ययन करते थे। वे वहां भी थे। वे गाय भी पालते थे और खेती-बाड़ी के काम भी करते थे। शिक्षक अपने शिष्यों को कई तरह के विज्ञान सिखाते थे और उन्हें बहुत कीमती सलाह देते थे। जीवन के क्षेत्र में उनकी बहुत उपयोगिता थी। उपनिषदों में उनके उपदेशों को इकट्ठा किया गया है। उपनिषद वेदों का सार हैं। उन्हें ये कहा जाता है। उनमें से कुछ उपदेश इस विषय में समाहित होने के कारण, वे विज्ञान के वर्तमान युग में भी प्रासंगिक हैं। इससे साफ पता चलता है कि प्राचीन समय में कर्मकांडों का व्यापक चलत था। फिर नैतिकता के बारे में कहा गया है-

"प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवा।

तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥"⁷

प्रिय वाक्य या मीठी बोली से सभी प्राणी संतुष्ट होते हैं। अतः हमें वही बोलना चाहिए (मधुर वचन ही बोलना चाहिए)। जब हम मीठा बोल सकते हैं, तो उसमें कैसी दरिद्रता या कंजूसी ? वेद पढ़ाने से सबसे बड़े गुरु सबसे आखिरी इंसान को सिखाते हैं- सच बोलो। धर्म बदलता रहता है। अपनी पढाई में औरत मत बनो सच की नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। भविष्य के लालच में नहीं आना चाहिए। पढाई और उपदिश में नहीं पड़ना चाहिए। देवताओं और पितरों के कामों में नहीं पड़ना चाहिए, देवताओं और पितरों के कामों में नहीं पड़ना चाहिए। हमें उन्हीं की सेवा करनी चाहिए जो अपने कामों में बेदाग हैं, दूसरों की नहीं, और हममें से जो सबसे अच्छे ब्राह्मण हैं, तुम्हें अपने अपने आसन से उनमें सांस लेनी चाहिए।

पाठ्यक्रम

स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी लेवल पर करिकुलम में नैतिक शिक्षा होनी चाहिए। करिकुलम को लागू करने से न सिर्फ प्रॉब्लम सॉल्व

होगी, बल्कि इसके लिए लगातार डेडिकेशन और मेहनत की ज़रूरत होती है। आपको खुद के बारे में अपना नज़रिया बदलना होगा।

निष्कर्ष

एक सुंदर सभ्य समाज बनाने के लिए लगातार नैतिक शिक्षा की ज़रूरत के बारे में मास मीडिया को भी पता होना चाहिए। नैतिक शिक्षा के प्रोग्राम को हमेशा मास मीडिया के ज़रिए पब्लिसाइज़ और फैलाया जाना चाहिए। इसके लिए भी, पब्लिक कोऑपरेशन की ज़रूरत मंज़ूर नहीं है और ज़रूरी है।

सन्दर्भ

1. तैत्तिरीय उपनिषद, शिक्षावल्ली
2. हितोपदेशः
3. रघुवंशम (प्र. श्लोक-8)
4. हितोपदेश
5. मनुस्मृति-अध्याय-2, श्लोक- 18
6. सुभाषितम्
7. चाणक्यनीति

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. उर्मिला रुस्तगी, जे. पी. मनुस्मृतिः, पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2005
2. महाभारतम्- गीताप्रेस, गोरखपुर, 1968
3. मुण्डकोपनिषद् - गीताप्रेस, गोरखपुर
4. स्वामिदयानन्दसरस्वती- यजुर्वेदसंहिता, संस्कार प्रकाशन, दिल्ली, 2013